विज्ञान क्या है?

आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

मुख्य द्वार (महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वार)

महर्षि ब्रह्मा अनुसंधान भवन

दिनांक 9/10/2011 को अन्तर्राष्ट्रिय ख्यातिर्लब्ध खगोल वैज्ञानिक प्रो. आभास कुमार मित्रा एवं प्रख्यात खगोल वैज्ञानिक प्रो. ए. आर. राव अनुसंधान भवन का उद्घाटन करते हुए

ओ३म्

विज्ञान क्या है?

लेखक

आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

सम्पादक

विशाल आर्य

(M.Sc. Theoretical Physics)

प्रकाशक

श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास

(वैदिक एवं आधुनिक भौतिक विज्ञान शोध संस्थान)

वेद विज्ञान मन्दिर, भागलभीम, भीनमाल जिला-जालोर

(राजस्थान) पिन- 343029

प्रथम संस्करण

सन् 2018

महाराणा प्रताप जयंती
द्वितीय ज्येष्ठ तृतीया
विक्रम संवत 2075

16.06.2018

संख्या - 1000

सहयोग राशि - 50/- रूपये मात्र

प्रकाशकः
श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास
(वैदिक एवं आधुनिक भौतिक विज्ञान शोध संस्थान)
वेद विज्ञान मन्दिर, भागलभीम, भीनमाल जिला-जालोर
(राजस्थान) पिन- 343029

सम्पादकीय

आज का युग विज्ञान और तकनीक का युग कहा जाता है और इस क्षेत्र में हम तीव्र गति से प्रगति भी कर रहे हैं। हमारे जीवन को सुखी बनाने के लिए वैज्ञानिक नई-2 तकनीकों का विकास भी कर रहे हैं परन्तु क्या हम सुखी हो पाये? वर्तमान तकनीकों पर विचारें कि क्या विज्ञान ने हमें कोई ऐसी तकनीक दी, जिसका कोई भी दुष्परिणाम न हो? इसका अर्थ यह हुआ कि कहीं तो हमसे भूल हो रही है। एक भूल जो मुझे प्रतीत होती है कि हमने भौतिक विज्ञान को गहराई से नहीं समझा। अपूर्ण भौतिक विज्ञान पर आधारित तकनीक हमें कभी सुख नहीं दे सकती। जब कोई वैज्ञानिक किसी तकनीक का निर्माण करता है, तो क्या वह सोचता है कि इसके दुष्परिणाम क्या होंगे? उसकी दृष्टि सदैव एकांगी ही रहती है। यही कारण है कि वर्तमान में कोई भी तकनीक निरापद नहीं है। वर्तमान विज्ञान आज अनेकों गम्भीर समस्याओं से घिरा है। सैद्धान्तिक भौतिकी की बात करें, तो पिछले 50-100 वर्षों में कुछ सिद्धान्तों के प्रायोगिक सत्यापन को छोड़ कर कोई बड़ा अनुसंधान कार्य नहीं हुआ।

सृष्टि की प्रत्येक प्रक्रिया को हम गणित से समझना चाहते हैं परन्तु गम्भीरता से विचारें कि क्या यह सम्भव है? क्या हम सृष्टि में हो रही सभी प्रक्रियाओं को गणित के माध्यम से समझ वा समझा सकते हैं? गणित हमारे विचारों को समझाने की एक भाषा मात्र है। यदि हम किसी सिद्धान्त को गणित से न समझा पाये, तो इसका अर्थ यह नहीं है कि वह विज्ञान नहीं है। उदाहरण के लिए हम बीज से वृक्ष के बनने की प्रक्रिया को गणित से नहीं समझा सकते, तो हम इतने जटिल ब्रह्माण्ड को गणित से जानने की बात कैसे सोच सकते है? ऐसे ही प्रयोग एवं प्रेक्षणों की भी अपनी एक सीमा है। जिसको हम detect नहीं कर सकते हैं, इसका अर्थ यह नहीं है कि उस वस्तु का कोई अस्तित्व ही नहीं है। यदि हमें ब्रह्माण्ड के बारे में और अधिक जानना है, तो हमें

गणित एवं प्रयोगों की परिधि से बाहर भी आना होगा, अन्यथा हमारा जीवन कुछ समीकरणों के हल करने में ही निकल जाएगा।

अल्बर्ट आइंस्टीन से लेकर वर्तमान तक के लगभग सभी उच्चस्तरीय वैज्ञानिकों ने माना है कि कोई एक शक्ति है, जिसने संसार को बनाया, नियमों में बांधा और वही इसे संचालित भी कर रही है, फिर हम उसके बारे में विचार करने में क्यों संकोच करते है? यदि गुरुदेव जैसा कोई व्यक्ति हमें इन समस्याओं से निकालने में सहायता करना चाहता है, तो हम उनकी बातों को दर्शन कहकर अथवा अहंकारवश छोड़ देते हैं, क्या ऐसा करना उचित है? मेरे अनुसार यह उचित नहीं है। हमें अपने हर प्रकार के पूर्वाग्रहों को छोड़कर प्रत्येक विचार को सुनने को उद्यत रहना चाहिए, जो हमें प्रगति कराने में सहायक हो, जो हमारे धन, समय, पुरुषार्थ आदि को व्यर्थ होने से बचाता हो, अन्यथा हमारा जीवन ऐसे ही निकल जाएगा।

गुरुदेव ने विज्ञान की सही परिभाषा करते हुए, शीर्ष वैज्ञानिकों, विज्ञान के छात्रों व प्रबुद्धजनों को एक नया मार्ग दिखाने का कार्य इस पुस्तिका के माध्यम से किया है। इसके साथ ही वैदिक विज्ञान के द्वारा पुस्तिका के अन्त में दिये गम्भीर प्रश्नों के उत्तर भविष्य में किसी कॉफ्रेंस के माध्यम से देने का आह्वान किया है। आशा है आप इस पुस्तिका को पढ़कर सही अर्थों में समझ सकेंगे कि 'विज्ञान क्या है?' इसी आशा के साथ

विशाल आर्य (अग्नियश वेदार्थी), उपाचार्य
M.Sc. Theoretical Physics (University of Delhi)
वैदिक एवं आधुनिक भौतिकी शोध संस्थान

विज्ञान की वर्तमान परिभाषा

आज विश्व में सर्वत्र विज्ञान की चर्चा सभी प्रबुद्ध ही नहीं, अपितु साधारणजन भी करते हैं। कुछ महानुभाव तो कदम-2 पर वैज्ञानिक प्रमाणों की गुणगरिमा गाते रहते हैं। अनेक वर्तमान वैज्ञानिक अपने विज्ञान के अतिरिक्त अन्य किसी भी पद्धति से सृष्टि आदि विषयक चिन्तन एवं तत्प्रसूत निष्कर्षों को दर्शन (Philosophy) कह कर उसकी उपेक्षा करते मैंने देखे हैं। मैं भारत के अनेक प्रसिद्ध वैज्ञानिकों से पिछले 12-13 वर्षों से संवाद करता रहा हूँ, इस कारण यह मेरा अपना अनुभव रहा है। इस सम्पूर्ण विषय पर विचार करके मैंने इस पुस्तिका के माध्यम से भारत सहित विश्व के शीर्ष वैज्ञानिकों तथा वैज्ञानिक प्रतिभा की धनी युवा पीढ़ी को एक विशेष सन्देश देना चाहता हूँ, जिससे वे विज्ञान की यथार्थता से अवगत हो सकें।

सर्वप्रथम हम वर्तमान दृष्टि से विज्ञान की परिभाषा पर विचार करते हैं। M.J. Clugston द्वारा सम्पादित Science Dictionary के अनुसार-

"The ongoing search for knowledge about the universe " को science कहते हैं। इस दृष्टि से संसार में प्रचलित ब्रह्माण्डविषयक शोधकार्य को विज्ञान कहते है। यह परिभाषा अति संक्षिप्त है। इससे विस्तृत परिभाषा करते हुए Chambers Dictionary में लिखा है-

"Knowledge ascertained by observation and experiment, critically tested, systematized and brought under general principles, esp in relation to the physical world, a department or a branch of such knowledge or study."

उधर oxford advanced learners dictionary के Indian Edition में science की परिभाषा इस प्रकार दी है-

"Organized knowledge esp when obtained by observation and testing of facts, obout the physical world, natural laws."

इन सब परिभाषाओं से स्पष्ट है कि **भौतिक जगत् अर्थात् ब्रह्माण्ड का जो ज्ञान प्रयोगों, प्रेक्षणों और विविध परीक्षणों से सुपरीक्षित एवं व्यवस्थित होता है, उसे आधुनिक विज्ञान की सीमा में माना जाता है।** इससे स्पष्ट होता है कि हमारे पास परीक्षण के जितने अधिक सामर्थ्ययुक्त संसाधन उपलब्ध होंगे, यह आधुनिक विज्ञान उतने अधिक परीक्षण करके सृष्टि के पदार्थों को जान सकता है। अपने तकनीकी साधनों की सीमा के बाहर विद्यमान कोई भी पदार्थ चाहे कितना भी यथार्थ क्यों न हो, उसे विज्ञान स्वीकार नहीं कर सकता। पाश्चात्य देशों में आइजक न्यूटन से पूर्व गुरुत्वाकर्षण बल का पता नहीं था, गैलीलियो एवं कॉपरनिकस के पूर्व पृथ्वी के आकार व परिक्रमण का ज्ञान नहीं था, तब उनके लिये गुरुत्वाकर्षण बल, पृथ्वी का गोलाकार होना तथा सूर्य के चारों ओर परिक्रमण करना आदि विषय विज्ञान के क्षेत्र में नहीं आते थे अर्थात् उनके लिये ये सब कल्पना मात्र थे। **जिस समय यूरोप में गैलीलियो एवं कॉपरनिकस ने जन्म भी नहीं लिया था, उस समय भारत के आर्यभट्ट, भास्कराचार्य व वराहमिहिर जैसे भारतीय खगोलशास्त्री ग्रहों की गतियों का ऐसा अनुसंधान कर रहे थे, जो यूरोप के लिये कल्पनातीत था परन्तु आधुनिक विज्ञान की प्रवृत्ति देखें कि उसकी दृष्टि में गैलीलियो व कॉपरनिकस तो वैज्ञानिक हो गये परन्तु भारतीय विद्वानों का कार्य विज्ञान के क्षेत्र में नहीं आता।** विश्व में कितने देश आर्यभट्ट आदि भारतीय खगोलशास्त्रियों को वैज्ञानिक के रूप में स्वीकार करना तो दूर, उन्हें जानते तक भी हैं? इस अपने देश में भी यदि कोई सरकार ऐसे भारतीय वैज्ञानिकों को पाठ्यक्रम में स्थान देती है, तो कोई विदेशी तो क्या कहेगा, अपने देश के

कथित सेक्यूलर कहाने वाले प्रबुद्ध तथा मीडिया इसे शिक्षा का साम्प्रदायीकरण बताकर कोलाहल मचाने लग जाते हैं। यह बौद्धिक दासता की दुःखद पराकाष्ठा है। यदि कोई मध्यकालीन भारतीय आचार्यों से अति प्राचीन महर्षि भरद्वाज एवं महर्षि कणाद आदि की चर्चा करें, तो उन्हें पौराणिक दन्त कथाएं बताकर उपहास किया जाता है, तो कहीं उग्र विरोध किया जाता है। यह विज्ञान के नाम पर दासता का कैसा ताण्डव है?

आज वेद, दर्शन, ब्राह्मण ग्रन्थों की वैज्ञानिकता की बात करने वाले ही नहीं बचे हैं। यदि मेरे जैसा कोई करता है, तो उसे वर्तमान वैज्ञानिकों से प्रमाण पत्र लेने की बात की जाती है। **मुझे यह स्वीकारने में कोई संकोच नहीं कि इस सबके पीछे पाश्चात्य दासता से ग्रस्त महानुभावों के साथ-2 वे महानुभाव और अधिक उत्तरदायी हैं, जो अब तक वेदादि शास्त्रों के अनुसंधान के नाम पर केवल शब्दों का जाल बुनते रहे हैं किंवा जो पाश्चात्य विज्ञान के अन्धानुगमन करने में ही अपना अनुसंधान मान लेते हैं।** मैं इन दोनों से भिन्न हूँ।

प्रिय पाठकगण! सर्वप्रथम मैं वर्तमान विज्ञान की परीक्षा उसी की परिभाषा और कहीं-2 उन्हीं की भाषा में करना चाहूँगा।

प्रयोग, प्रेक्षणों की संदिग्धता

इस विषय में सर्वप्रथम हम प्रयोग, प्रेक्षण व गणित की असंदिग्धता पर वर्तमान महान् वैज्ञानिकों के विचार ही उद्धृत् करते हैं-

प्रसिद्ध ब्रिटिश भौतिक शास्त्री Stephen Hawking का कथन है-

"Any physical theory is always provisional in the sense that it is only a hypothesis, you can never prove it. No matter how many times the result of experiments agree with some theory. you can never be sure that the next time a result will not contradict the theory, on the other hand you can disprove a theory by finding even a single observation that disagree with the predictions."

(A Briefer History of Time- Pg.14)

इसका भाव यह है कि कोई भी भौतिक सिद्धान्त अस्थायी होता है। वस्तुतः एक परिकल्पना ही होता है। आप उसे कभी सिद्ध नहीं कर सकते, भले ही उसे आपने कई बार प्रयोगों से परीक्षित कर लिया हो। आप इसे सुनिश्चित नहीं कर सकते कि आगामी किसी प्रयोग में विपरीत निष्कर्ष प्राप्त न होवे। आपका कोई एक भी विपरीत निष्कर्ष आपकी कई भविष्यवाणियों को असिद्ध कर सकता है।

इसी प्रकार का विचार विश्वप्रसिद्ध भौतिक शास्त्री सर अल्बर्ट आइंस्टीन ने व्यक्त करते हुए लिखा है-

"No amount of experimentation can ever prove me right, a single experiment can prove me wrong."

(Meeting the standards in primary science- By Lynn D. Newton, Pg.21)

इसी पुस्तक का लेखक पृ.सं. 21 पर ही ऑस्ट्रिया के दार्शनिक Karl Pooper को उद्धृत करते हुए लिखता है-

.....you can never prove or verify a theory, you can only ever disprove it. So investigations and experiments serve the purpose of testing the idea but not to prove it to be true.

यहाँ भी वर्तमान विज्ञान की असंदिग्धता पर प्रश्न चिह्न लगाया गया है।

Stephen Hawking के ही साथी Roger Penrose का भी यही मत है, वे लिखते हैं-

One might have thought that there is no real danger here because if the direction is wrong the experiment would disprove it, so that some new direction would be forced upon us. this is the traditional picture of how science progresses- But I fear that this is too stringent a criterion and definitely too idealistic a view of science in this modern world of 'Big Science'.

(The Road to Reality- Pg.1020)

इसका आशय यह है कि कोई वैज्ञानिक यह विचार सकता है कि विज्ञान में कोई संकट नहीं है अर्थात् उसके सभी निष्कर्ष सत्य ही होते हैं। वह मान सकता है कि यदि निष्कर्ष गलत होता, तो उसे प्रयोग व परीक्षण ही असिद्ध कर देते और दूसरी पृथक् निष्कर्षयुक्त दिशा प्राप्त हो जाती। इस पर लेखक लिखता है कि आधुनिक विज्ञान का यह विचार अधिक ही कट्टर और आदर्शवादी है।

अब सर अल्बर्ट आइंस्टीन का पुनः मत देखें-

A theory can be proved by experiment, but no path leads from experiment to the birth of a theory.

(एक सिद्धान्त प्रयोग द्वारा सिद्ध हो सकता है परन्तु कोई भी प्रयोग किसी सिद्धान्त को जन्म नहीं दे सकता।)

गणितीय कसौटी मीमांसा

विज्ञान की प्रायोगिकता के विषय में इन दो वैज्ञानिकों की टिप्पणी के पश्चात् इसके गणितीय आधार पर भी हम प्रख्यात अमरीकी वैज्ञानिक Richard P. Feynman के विचारों को उद्धृत करते हैं–

"But mathematical definitions can never work in the real world. A mathematical definition will be good for mathematics, in which all the logic can be followed out completely, but the physical world is complex."

(Lectures on Physics- P.148)

अर्थात् गणितीय व्याख्याएं कभी भी वास्तविक संसार में कार्य नहीं करतीं। ये व्याख्याएं गणित के लिए तो अच्छी हैं, जहाँ ये व्याख्याएं पूर्णतः तर्क का अनुसरण करती हैं परन्तु भौतिक संसार बहुत जटिल है।

इन्होंने इससे भी आगे बढ़कर कहा–

"I love nature, and I hate mathematics."
(मैं प्रकृति से प्रेम करता हूँ और गणित से घृणा।)

एवं

"some things that satisfy the rules of algebra can be interesting to mathematics even though they don't always represent a real situation."

(कुछ चीजें, जो बीजगणित के नियमों से सिद्ध हो सकती है, गणित के लिए तो रुचिकर हो सकती हैं, जबकि वे सदैव वास्तविक परिस्थिति को नहीं दर्शाती।)

उधर महान् वैज्ञानिक सर अल्बर्ट आइंस्टीन इस विषय में कहते हैं-

As far as the laws of mathematics refer to reality, they are not certain, as far as the certain, they do not refer to reality.

(जहाँ तक गणित के नियम वास्तविकता को दर्शाते हैं, वे निश्चित नहीं होते, जहाँ तक वे निश्चित होते हैं, वे वास्तविकता को नहीं दर्शाते)

पुनः वे कहते हैं-
"I don't believe in mathematics." *(मैं गणित में विश्वास नहीं करता।)*

देखें आपके एक वैज्ञानिक बर्नोली ने तो यहाँ तक कह दिया-

"it would be better for true physics if there were no mathematicians on earth."
(यथार्थ भौतिकी के लिए अच्छा होता, यदि कोई गणितज्ञ ही धरती पर नहीं होता।)

पाठक विचारें कि वे महान् वैज्ञानिक हैं, जिन्होंने गणित का प्रचुर प्रयोग किया है, और विज्ञान को एक महान् आधार प्रदान किया है। **जब ये गणित के आग्रह से बंधे नहीं हैं, तब मुझे क्यों गणितीय व्याख्या द्वारा वैदिक विज्ञान समझाने की अनिवार्यता बतायी जाती है?** क्या वे इन वैज्ञानिकों को अपने सम्मुख अल्पज्ञानी मानते हैं?

वैज्ञानिकों के मत से सहमति रखते हुए एक अन्य वैज्ञानिक James Clark Maxwell का कथन है-

"The true logic of the world is in the calcululs of probabilities"

(*Lectures on Physics by Richard P Feynman- Pg.64*)

इसका भाव यह है कि संसार वास्तव में सम्भावनाओं का गणित है।

Feynman बड़े ही स्पष्ट शब्दों में स्वीकारते हैं-

"We do not yet known all basic laws. There is an expanding frontier of ignorance. (*Lectures on Physics- Pg.1*)

अर्थात् अभी तक वैज्ञानिक विज्ञान के मूल सिद्धान्तों को नहीं जान पाये हैं।

वर्तमान विज्ञान का विचित्र लक्षण

अब वर्तमान विज्ञान का एक विचित्र लक्षण भी देखें। Stephen Hawking ने अपनी वेबसाइट www.hawking.org.uk पर एक स्थान पर लिखा है-

One can not ask whether the model represents reality, only whether it works. A model is a good model if first it interprets a wide range of observations, in terms of a simple and elegant model. And second, if the model makes definite predictions that can be tested and possibly falsified by observation.

यहाँ हॉकिंग स्वयं वर्तमान विज्ञान के खोखलेपन किंवा अनेकत्र मिथ्यापन को न केवल स्वीकार कर रहे हैं, अपितु प्रेक्षणों द्वारा मिथ्या सिद्ध हो सकने को विज्ञान का एक लक्षण वा विशेषता भी घोषित कर रहे हैं। **ऐसा मिथ्या सिद्ध हो सकने वाला विज्ञान कैसे किसी सत्यपिपासु वा सत्यव्रती के लिए प्रमाण बन सकता है? क्या हम वैदिक वैज्ञानिकों को ऐसे विज्ञान से सत्यता का प्रमाणपत्र लेने की आवश्यकता है?**

वैज्ञानिकों की हठ

मैं पिछले लगभग 12-13 वर्षों से भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र (BARC), मुम्बई एवं टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फण्डामेन्टल रिसर्च (TIFR), मुम्बई जैसे भारत के विख्यात वैज्ञानिक शोध संस्थानों एवं अन्य संस्थानों के वैज्ञानिकों से आधुनिक भौतिकी की समस्याओं पर चर्चा करता रहा हूँ। मैं इस संवाद से वर्तमान भौतिकी को अनेक अनसुलझी समस्याओं से ग्रस्त पाता हूँ। अभी अगस्त 2017 में मैं अपने वैदिक भौतिकी अनुसंधान पर चर्चा हेतु भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी विभाग में गया। वहाँ एक शीर्ष अधिकारी, जो स्वयं भौतिक शास्त्री भी हैं, से व्यापक विचार-विमर्श हुआ। उन्होंने मुझे वर्तमान विज्ञान का सार्वभौमिक अनुशासन बतलाते हुए कहा- ''स्वामी जी! आप अपने शोधपत्र विज्ञान की उच्च स्तरीय पत्रिकाओं में प्रकाशित कराएँ। लेख भी आधुनिक भौतिक विज्ञान की शैली एवं अंग्रेजी भाषा में लिखे हों तथा गणित का भी प्रचुर समावेश हो। यदि आपके लेख उनमें प्रकाशित हो जाते हैं, तो फिर आपको वैज्ञानिक स्वयं आमंत्रित करने लग जाएंगे।... आप अपने लेख ऐसे मत लिखना, जैसे प्रख्यात अमेरिकी वैज्ञानिक आइंस्टीन व पीटर हिग्स के थे, जिन्हें प्रमाणित करने में दशकों व्यतीत हो जायें बल्कि आप ऐसे लेख लिखें, जिन पर तत्काल ही हम प्रयोग करके परिणाम प्राप्त कर सकें....''

पाठकगण! मैं लेख लिखकर उन वर्तमान भौतिक वैज्ञानिकों, जो स्वयं अपने क्षेत्र में अनेक समस्याओं में उलझे हैं तथा अपने अनेक परिणामों को स्वयं मिथ्या सिद्ध घोषित करके नये-२ परिणाम ला रहे हैं, से परीक्षा कराऊँ। भला जो व्यक्ति स्वयं भटक रहा हो, वह दूसरे को कैसे मार्ग दिखला सकता है? पत्रिकाओं का निर्णायक वा संपादक मण्डल, लेखक को बुलाकर संवाद भी नहीं करता और अपनी ही ओर से न्याय करके अनेक लेखों को अमान्य कर देता है, यह मैं भली-भाँति जानता हूँ।

आधुनिक प्रसिद्ध वैज्ञानिकों के भी प्रवाह के विपरीत किसी लेख को प्रकाशित करने में नाना बाधाएं आती हैं, इससे मैं भली-भाँति अवगत हूँ, यहाँ ऐसे प्रमाण देना उचित नहीं है। **जब एक ही शैली व परम्परा के वैज्ञानिकों के सत्य, जो उनकी दृष्टि में प्रेक्षण, प्रयोग वा गणितीय संकल्पनाओं पर सत्य सिद्ध होता है, पर आधारित शोधपत्रों के प्रकाशन में नानाविध संघर्ष व क्लेशों का सामना करना पड़ता है, तब मुझ जैसे वैदिक वैज्ञानिक की सर्वथा पृथक् शैली व प्रवाह के शोधपत्र वे आधुनिक विज्ञान के रंग में सर्वथा रंगे पूर्वाग्रही वैज्ञानिक भला क्यों प्रकाशित करेंगे?** यद्यपि उन वैज्ञानिक अधिकारी महोदय, जिन्होंने मुझे शोधपत्र प्रकाशित करने का परामर्श दिया था, ने इस प्रक्रिया को दर्दभरी व दुर्भाग्यपूर्ण होना स्वीकार किया।

इस दुर्भाग्य व दर्द का समाधान करने की दिशा में किसी वैज्ञानिक किंवा भारत सरकार का कभी ध्यान गया ही नहीं। शोक है कि सर्वत्र वर्तमान विज्ञान की दासता को बुद्धि के नेत्र बन्द करके सगर्व गले लगा लिया गया है। ऐसे दासत्व से अभिशप्त वैज्ञानिकों व ब्यूरोक्रेट्स को जगाने के लिए ही इस पुस्तिका को लिखना आवश्यक समझा है।

अब मैं वर्तमान विज्ञान की शोधप्रक्रिया, जिस पर कुछ आधुनिक प्रसिद्ध वैज्ञानिकों के विचार लिख चुका हूँ, की स्वयं भी परीक्षा करता हूँ-

वर्तमान शोध प्रक्रिया की परीक्षा

विज्ञान उपलब्ध तकनीक के द्वारा परीक्षित तथ्यों को ही विज्ञान की सीमा के अन्तर्गत स्वीकार करता है। मान लें कि कोई वैज्ञानिक किसी दीवार के निकट खड़ा है परन्तु उसके पास उस दीवार की ऊंचाई नापने का कोई साधन उपलब्ध नहीं है। यदि कोई अन्य व्यक्ति, जो ऊंचाई को अपने अनुभव से नापने में सक्षम हो,

उसकी ऊंचाई बता दे, तब वह वैज्ञानिक उस व्यक्ति के द्वारा मापी गई ऊंचाई को कभी वैज्ञानिक नहीं मानेगा, भले ही संसाधनों पर निर्भर बना वह वैज्ञानिक स्वयं उसकी ऊंचाई नहीं बता पाये। आश्चर्य है कि तकनीक की अधीनता जिसकी विवशता है, वह किसी सूक्ष्म व दूरगामी बुद्धिसम्पन्न व्यक्ति की कोई बात मानने को उद्यत नहीं है। मैं अपने अनुभव का एक प्रसंग यहाँ पाठकों को बताना चाहूँगा। एक बार मैंने टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फण्डामेन्टल रिसर्च (TIFR) मुम्बई में Astronomy व Astrophysics के प्रोफेसर ए. आर. राव से निवेदन किया कि वे सूर्य के नाभिक की त्रिज्या की गणना करके रखें, मैं मुम्बई आ रहा हूँ। जब मैं उनके पास पहुँचा, तो उन्होंने अपनी गणना लगभग 1 लाख 66 हजार किमी बतायी अर्थात् उनकी गणना पूर्ण निश्चित नहीं थी। निश्चित ही उनकी गणना में गणित एवं अनेक प्रेक्षणों का सहयोग लिया गया होगा। ये गणना उनकी स्वयं की होगी वा किन्हीं अन्य वैज्ञानिकों की, वर्तमान वैज्ञानिकों की दृष्टि में विज्ञान की सीमा में आती है, भले ही वह लगभग में बतायी गयी हो। 1,66,000 लगभग कहने का अर्थ है कि 400-500 किमी का अधिक वा न्यून होना सम्भव है, जब प्रो. राव ने मुझसे पूछा, तो मैंने कहा कि सूर्य के नाभिक की त्रिज्या **महर्षि ऐतरेय महीदास** के ऐतरेय ब्राह्मण के आधार पर मेरी गणना 1,50,545 किमी है। मेरी गणना लगभग में नहीं है। इसमें 1 किमी का भी अन्तर नहीं हो सकता, जबकि वर्तमान विज्ञान की गणना में 400-500 किमी का अन्तर आने की पूरी-2 सम्भावना है। **इतने पर मेरी गणना इन वैज्ञानिकों की दृष्टि में Philosophical मानी जायेगी और राव साहब की गणना वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित, यह कैसा न्याय है, यह कैसा विज्ञान है? यह बात पृथक् है कि मैंने महर्षि ऐतरेय महीदास के ग्रन्थ की जिस पंक्ति से यह गणना की है, उसे संसार का संस्कृतज्ञ वा वेदादि शास्त्रों का प्रख्यात कोई विद्वान् कदाचित ही कर पाये।** मैंने यहाँ सूर्य के नाभिक की त्रिज्या का एक उदाहरण मात्र दिया है। **मेरे ग्रन्थ 'वेदविज्ञान-आलोक' में सैकड़ों ऐसे विषय हैं, जिन पर वर्तमान**

विज्ञान अपनी शैली से सोचने में दशकों का समय व्यतीत करेगा, अरबों-खरबों डॉलर खर्च करेगा परन्तु मेरे ग्रन्थ से उन्हें अनायास यह सब मिल सकेगा, जिस पर वह अपने ढंग से प्रयोग वा प्रेक्षण करने का प्रयास कर सकते हैं। क्या वैज्ञानिकों को यह लाभ कम दिखाई देता है?

आज यदि मैं कहूँ कि धनंजय वायु रश्मियां प्रकाश की अपेक्षा तीव्र गति से गमन करती हैं, तो वर्तमान भौतिक वैज्ञानिक आइंस्टीन के सापेक्षता सिद्धान्त का हवाला देकर इसे मानने से इंकार करते हैं, जबकि वे स्वयं Space Inflation की गति 10^{28} km/sec बताते हैं, जो प्रकाश गति की अपेक्षा 10^{20} गुनी है। यहाँ सापेक्षता सिद्धान्त कहाँ गया? वे Space की संरचना नहीं जानते, पुनरपि उसे curve, distort, expand वा inflate होने वाला मानते हैं। वे इस पर मौन हो जाते हैं कि जिस पदार्थ की कोई संरचना नहीं है, वह कैसे curve, distort वा expand हो सकता है? यदि हम Space की संपूर्ण संरचना बताते हैं, तो हमसे experiment वा math मांगते हैं। वे Time के बारे में कुछ भी नहीं जानते पुनरपि उसका Big Bang के समय उत्पन्न होना, Black Hole पर रुकना अथवा Relativity में उसका घटना व बढ़ना मानते हैं। **भला, जिस वस्तु के बारे में कुछ भी ज्ञान नहीं, उसके बारे में वे ऐसे दावे कैसे कर देते हैं?** यदि हम काल को व्यवस्थित व तर्कसंगत तरीके से समझाने लगें, तो उन्हें कल्पना प्रतीत होता है। मेरा निश्चित मत है कि वे अपनी गणितीय व्याख्याओं के सहारे इस ब्रह्माण्ड में मनगढ़ंत कल्पनाएं करने को वैज्ञानिक मानते हैं, भले ही वे नितांत मिथ्या व अतार्किक ही क्यों न हों? मैं पूछता हूँ कि गणित का आधार क्या है? **क्या गणित स्वयं तर्क पर आश्रित नहीं है? तब क्यों हमारी तर्क व ऊहा को मात्र philosophy कहकर टालते हैं।**

विज्ञान व दर्शन

आज जो वैज्ञानिक मेरी Vaidic Theory of Universe को विज्ञान न मानकर philosophy मानकर उपेक्षित करने का प्रयास करते हैं, मैं उन्हें उनके ही Max Born का उद्धरण देता हूँ–

I am now convinced that theoretical physics is actual philosophy.
(अब मैं समझ गया हूँ कि सैद्धान्तिक भौतिकी वास्तव में दर्शन है।)

अब बताइये, कि फिर मेरी theory क्यों आपको theoretical physics प्रतीत नहीं होती? मैं इसे Vaidic theoretical physics कहता हूँ।

मैं तो इसे इस ढंग से कहता हूँ कि **theoretical physics का जन्म सदैव philosophy अर्थात् तार्किक व व्यवस्थित चिंतन से ही होता है और जब theoretical physics की सीमा समाप्त हो जाती है, तब फिर philosophy अर्थात् तार्किक चिंतन ही कार्य करता है अर्थात् physics का अंत भी philosophy से ही होता है।** हाँ, philosophy वास्तव में philosophy ही हो, जिसका आधार सत्य तर्क व प्रखर ऊहा के द्वारा सुदृढ़ हुआ हो, न कि केवल मनगढ़ंत कल्पना को philosophy कहेंगे। वस्तुतः philosophy के नाम पर विश्व भर में ऐसी कल्पनाओं की भरमार है, इस कारण वैज्ञानिकों में उसके प्रति उपेक्षा का भाव उत्पन्न हुआ है। यह बात पृथक् है कि Cosmology में वैज्ञानिक भी स्वयं नाना कल्पनाओं का निरंतर जन्म दे रहे हैं।

परिवर्तनशील वर्तमान विज्ञान

अमेरिकी खगोल वैज्ञानिक एडविन हबल ने red shift के प्रेक्षण से निष्कर्ष निकाल लिया कि ब्रह्माण्ड त्वरित वेग से फैल रहा है। सभी गेलैक्सियां त्वरित वेग से एक-दूसरे से दूर भाग रही हैं। मैंने सन् 2004 में भारत के एक प्रख्यात खगोलशास्त्री को पत्र में यह लिखा, तब उन्होंने उपहास करते हुए लिखा, ''स्वामी जी! आप सोचते हैं कि 70-80 वर्षों से प्रबुद्ध वैज्ञानिकों के द्वारा निरन्तर किये जा रहे प्रेक्षण मिथ्या हैं और आप सही हैं, यह उचित नहीं. ..'' ब्रह्माण्ड के प्रसारण, वह भी त्वरित प्रसारण पर संसार में अनेक वैज्ञानिकों को नोबेल पुरस्कार मिल चुके हैं, लेकिन मैंने इसे कभी स्वीकारा नहीं। अपनी प्रथम लघु पुस्तक **'सृष्टि का मूल उपादान कारण'** में मैंने त्वरित वेग से प्रसारण का तो पूर्णतः खण्डन किया है, परन्तु विज्ञान तो प्रेक्षण, गणित, प्रयोग व परीक्षण करके ही कोई बात मानता है, तो मेरी क्या गणना? अब विगत वर्ष 2016 में वर्तमान वैज्ञानिकों को आधा सत्य समझ में आया कि ब्रह्माण्ड फैल तो रहा है परन्तु त्वरण के साथ नहीं। उन्होंने यह भी माना कि इस सिद्धान्त पर नोबेल पुरस्कार देना ही गलत था।

Instead of finding evidence to support the accelerated expansion of the Universe, Sarkar and his team say it looks like the Universe is expanding at a constant rate. If that's truly the case, it means we don't need dark energy to explain it....Now, to be clear, this is just one study, and it's a big, extremely controversial claim that a Nobel Prize-winning discovery is fundamentally wrong. (Because I don't have to tell you that Nobel Prizes aren't given out lightly.)

(https://www.sciencealert.com/no-the-universe-is-not-expanding-at-an-accelerated-rate-say-physicists)

एक अन्य उदाहरण देता हूँ- ब्लैक हॉल को लेकर सारी दुनिया का वैज्ञानिक बाजार गर्म रहा है। भारतीय खगोलशास्त्री मेरे मित्र प्रो. आभास मित्रा को अगस्त 2004 से मैंने वर्तमान कथित ब्लैक हॉल की अवधारणा का खण्डन करते देखा है। 29 अगस्त 2013 को मैंने भी विश्व के अनेक देशों के प्रसिद्ध वैज्ञानिक संस्थानों व वैज्ञानिकों, जिनमें स्टीफन हॉकिंग भी सम्मिलित हैं, को वर्तमान भौतिकी पर 12 प्रश्न भेजे। इन प्रश्नों में से एक प्रश्न ब्लैक हॉल को लेकर भी था। किसी ने कोई उत्तर नहीं दिया। प्रो. मित्रा जी ने साक्षात् चर्चा में कहा कि इनमें से कुछ प्रश्नों का उत्तर तो वर्तमान विज्ञान 100 वर्षों में भी नहीं दे सकता। स्टीफन हॉकिंग के टेक्नीकल असिस्टेंट का सामान्य सा एक पत्र आया। उसके उपरान्त 24 जनवरी 2014 में अकस्मात् हॉकिंग साहब ने 'Nature' पत्रिका में वक्तव्य जारी कर कहा कि जैसा हम मानते आये हैं, वैसा कोई ब्लैक हॉल ब्रह्माण्ड में नहीं है। अब जरा विचारें, कि पहले उनके प्रेक्षण, परीक्षण व गणित सभी ब्लैक हॉल की पुष्टि कर रहे थे और ये ही पुष्टि वैज्ञानिक सत्य थी लेकिन अब उनके ही प्रेक्षण, परीक्षण व गणित ने वैज्ञानिक सत्य को शीर्षासन करा दिया। **लेकिन भारतीय खगोलशास्त्री आभास मित्रा को भारतीय मीडिया ने उतना महत्व नहीं दिया, जबकि अपने ही तथ्यों को पलटने वाले स्टीफन हॉकिंग मीडिया की सुर्खिया बने। यह कैसी बौद्धिक दासता है?** वर्तमान विज्ञान अपने ही तथ्यों को बार-2 पलटने को ही अपनी शक्ति मानते हुए उसे सगर्व dynamic कहता है। यह कथित dynamic विज्ञान अर्धसत्य तथ्यों को वैज्ञानिक सत्य मानकर उनके आधार पर टैक्नोलॉजी का आविष्कार करता है। वहाँ भी कुछ तो अपनी dynamics के अहंकार में, तो कुछ व्यावसायिकता के जाल में फंसकर जन साधारण को सुख सुविधाओं का लालच देकर ऐसी टैक्नोलॉजी का आविष्कार करता है, जिससे कुछ साल पश्चात् घातक परिणाम दिखाई देते हैं। **पहले तो हानिकारक टैक्नोलॉजी के अनुसंधान में भारी धन व समय व्यय**

होता है, पुनः उसके दुष्परिणामों के अनुसंधान में धन व समय का व्यय किया जाता है। उसके पश्चात् पुनः दूसरी टैक्नोलॉजी के अनुसंधान में ऐसा ही व्यय, उसके दुष्परिणामों को खोजने में ऐसा ही व्यय। यह दुश्चक्र सदियों से चल रहा है और वर्तमान में तो अर्धसत्यों पर आधारित यह घातक टैक्नोलॉजी सुविधाओं के साथ-2 ऐसे पर्यावरणीय संकट खड़ा कर रही है, जिसके कारण प्राणिमात्र का इस धरती पर रह पाना आगामी 100-200 वर्षों में असम्भव सा हो जायेगा। विज्ञान की यह कैसी dynamics है? यह कैसी पॉवर है, विज्ञान की? वस्तुतः वर्तमान विज्ञान उस बालक की भांति व्यवहार कर रहा है, जो किसी बात को सुने बिना दौड़ जाता है परन्तु लक्ष्य तक पहुँचने से ठीक पूर्व उसे यह ध्यान आता है कि मैं यहाँ क्यों भेजा गया हूँ, यह तो सुना ही नहीं। इस कारण पुनः प्रेषक के पास वापस दौड़ता है। उसे अन्य उदाहरण से इस प्रकार भी समझ सकते हैं **कि वर्तमान विज्ञान घनघोर जंगल में मार्ग खोजते उस भ्रान्त व्यक्ति के समान है, जो किसी अनुभवी व्यक्ति, जो तनिक चिन्तन-मात्र से मार्ग का अनुमान लगाने में समर्थ है, की बात को प्रमाण न मानकर स्वयं ही अपने साधनों के बल पर मार्ग खोजता रहता है। अनेक बार मार्ग भटकता है, तो कभी कभी मार्ग मिल भी जाता है, इतने पर भी वह इस भटकने व सुधरने को ही अपनी बुद्धिमत्ता मानता है।**

वर्तमान विज्ञान व तर्क

वस्तुतः वर्तमान विज्ञान को तर्क, चिन्तन, मनन, ध्यान सब कुछ काल्पनिक प्रतीत होता है। वह इसे Philosophical मानकर उपेक्षित कर देता है। मैं ऐसे वैज्ञानिक मित्र महानुभावों से पूछना चाहता हूँ कि क्या तर्क, चिन्तन व ऊहा के अभाव में प्रयोग, प्रेक्षण कभी सत्य तथ्यों का उद्घाटन कर सकते हैं? वर्तमान विज्ञान के वे ही तथ्य मिथ्या सिद्ध होते हैं, जिन पर गहराई से मनन, चिन्तन व तर्क का उपयोग नहीं किया गया, जबकि वे तथ्य सत्य ही रहते

हैं, जिनमें विवेकपूर्वक चिन्तन किया गया हो। वर्तमान कॉस्मोलॉजी तो अनेक चिन्तनशून्य प्रेक्षणों, काल्पनिक गणितीय संकल्पनाओं व प्रयोगों का भण्डार है। तर्क व चिन्तन के साथ किये समान प्रेक्षण वा प्रयोगों का निष्कर्ष पृथक्-२ हो सकता है, जबकि तर्क व चिन्तन की उपेक्षा करने से उनका निष्कर्ष समान ही होता है। यही कारण है कि cosmic background radiation एवं red shift को देखने से सम्पूर्ण वैज्ञानिक जगत् Big Bang रूपी ऐसा निष्कर्ष निकाला, जिसका मूल ही स्वयं समस्याग्रस्त है। इस पर अन्य अनेकों प्रश्न भी अब तक अनुत्तरित हैं, पुनरपि Big Bang की हठ त्यागने को अधिकांश वैज्ञानिक तैयार नहीं है। यदि कोई वैज्ञानिक cosmic background radiation एवं red shift का अन्य कारण बताकर Big Bang रूपी निष्कर्ष को मिथ्या कहे, तो उसकी दुराग्रहपूर्वक उपेक्षा की जाती है, यह कैसा विज्ञान है? कभी-२ ये आधुनिक विज्ञान की, मृगतृष्णा की भांति मिथ्या कल्पना जैसा प्रतीत होता है, जो अनायास ही कोई दृश्य दिखाई देने पर तत्काल ही निष्कर्ष निकाल बैठता है। **इसी कारण विज्ञान निरन्तर बदलता जा रहा है अर्थात् निरन्तर भूल करना पुनः सुधारना परन्तु किसी की बात नहीं मानना, वर्तमान विज्ञान की नियति बन चुका है।** वह प्रत्यक्षवादी है, अनुमान व शब्द प्रमाणों की पूर्णतः उपेक्षा करता है। इसी कारण वह अपूर्ण व त्रुटिपूर्ण निष्कर्षों से ग्रस्त मानव ही नहीं अपितु प्राणिमात्र के लिये नित नये संकट खड़े करता जा रहा है। यह है वर्तमान विज्ञान पर हमारी दृष्टि।

वैदिक विज्ञान मीमांसा

अब हम वैदिक विचारधारा के अनुसार 'विज्ञान' शब्द की परिभाषा पर विचार करते हैं-

यह शब्द 'वि' पूर्वक 'ज्ञा अवबोधने' धातु से निष्पन्न होता है, जिसका अर्थ है- विविध प्रकार का व्यापक व व्यवस्थित ज्ञान

ही विज्ञान कहलाता है। महर्षि दयानन्द ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के 'वेदविषय' नामक अध्याय में लिखते हैं-

''विज्ञान उसको कहते हैं कि जो कर्म, उपासना और ज्ञान, इन तीनों से यथावत् उपयोग लेना और परमेश्वर से लेकर तृण-पर्य्यन्त पदार्थों के साक्षात् बोध का होना, उनसे यथावत् उपयोग का करना।''

इसके संस्कृत भाग में **''पृथिवीतृणमारभ्य प्रकृतिपर्य्यन्तानां पदार्थानां ज्ञानेन यथावदुपकारग्रहणम्''** कहकर इस ब्रह्माण्ड के स्थूल पदार्थों से लेकर सूक्ष्मतम प्रकृतिरूप पदार्थ का यथार्थ ज्ञान तथा इससे अपना तथा दूसरों का उपकार करना ही विज्ञान बतलाया है। उधर वे आर्य्योद्देश्यरत्नमाला में विद्या, जो विज्ञान का ही दूसरा नाम है, की परिभाषा करते हुए लिखते हैं-

''जिससे ईश्वर से लेके पृथिवीपर्य्यन्त पदार्थों का सत्य विज्ञान होकर उनसे यथायोग्य उपकार लेना होता है, इसका नाम विद्या है।''

इन परिभाषाओं से सम्पूर्ण सृष्टि के जड़ पदार्थों के अतिरिक्त चेतन पदार्थों का ज्ञान भी विज्ञान के क्षेत्र में ग्रहण किया गया है।

विज्ञान व ईश्वर

यहाँ हम चेतन पदार्थ के विषय में इतना ही कहना चाहेंगे कि बिना इनके ग्रहण किये वर्तमान विज्ञान सदैव समस्याग्रस्त रहेगा। जिसे वर्तमान विज्ञान काल्पनिक Philosophical पदार्थ कहता है, वही इस सृष्टि के प्रत्येक बल, क्रिया व ऊर्जा का मूल है। **जब मूल पर चिन्तन नहीं किया जायेगा, तब शाखाओं पर चिन्तन करने का निष्कर्ष निश्चित ही अधूरा रहेगा।** मैं जानता हूँ कि चेतन की बात करने से वर्तमान वैज्ञानिक सोच वाले महानुभाव कोलाहल करने

लग जाएंगे। इस कारण मैं ईश्वर के विषय में भी कुछ प्रसिद्ध वैज्ञानिकों को यहाँ आपकी सन्तुष्टि के लिए उद्धृत कर रहा हूँ–

"The more I study science, the more I believe in God."

"I want to know how God created this world. I am not interested in this or that phenomenon, in the spectrum of this or that element. I want to know his thoughts."
(जितना अधिक मैं विज्ञान को पढ़ता हूँ, उतना अधिक ईश्वर में मेरा विश्वास होता है)
(मैं जानना चाहता हूँ कि ईश्वर ने संसार को कैसे बनाया? मुझे इस या उस तत्व के स्पेक्ट्रम, इस या उस घटना में कोई दिलचस्पी नहीं है। मैं उनके विचार को जानना चाहता हूँ।)

(Albert Einstein)

Those who say that the study of science makes a man an atheist must be rather silly.
(जो लोग कहते हैं कि विज्ञान का अध्ययन एक आदमी को नास्तिक बनाता है, यह मूर्खतापूर्ण बात है।)

(Max Born)

If you study science deep enough and long enough, it will force you to believe in God.
(यदि आप विज्ञान का पर्याप्त गहराई से और काफी लंबे समय तक अध्ययन करते हैं, तो यह आपको भगवान् में विश्वास करने के लिए मजबूर करेगा।)

(Lord William Kelvin)

In the absence of any other proof, the thumb alone would convince me of God's existence.
(किसी भी अन्य सबूत की अनुपस्थिति में अकेला अंगूठा मुझे भगवान् के विद्यमान होने का विश्वास दिला देगा)

(Sir Isaac Newton)

Both religion and science require a belief in God. For believers, God is in the beginning, and for physicists He is at the end of all considerations.
(धर्म और विज्ञान दोनों के लिए भगवान् में विश्वास की आवश्यकता है। आस्तिक लोग उसका प्रारम्भ में, जबकि भौतिकविद् उसे चिंतन मनन के पश्चात् ही स्वीकार करते हैं।)

(Max Planck)

I have concluded that we are in a world made by rules created by an intelligence. Believe me, everything that we call chance today won't make sense anymore. To me it is clear that we exist in a plan which is governed by rules that were created, shaped by a universal intelligence and not by chance.
(मैंने निष्कर्ष निकाला है कि हम एक बुद्धिमत्तापूर्ण नियमों द्वारा बनाए गये संसार में हैं। मेरा विश्वास करो, जिसे हम आज संयोग कहते हैं, उसका कोई अर्थ नहीं हैं। मेरे लिए यह स्पष्ट है कि हम ऐसे योजनाबद्ध ब्रह्माण्ड में स्थित हैं, जो नियमों द्वारा शासित है, जिसे एक सार्वभौमिक बुद्धि द्वारा बनाया और स्वरूप दिया गया है, न कि संयोग से।)

(Michio Kaku)

Little science takes you away from God but more of it takes you to Him.
(थोड़ा विज्ञान आपको भगवान् से दूर ले जाता है परन्तु अधिक विज्ञान उसके पास ले जाता है।)

(Louis Pasteur)

If we need an atheist for a debate, we go to the philosophy department. The physics department isn't much use.
(यदि हमें बहस के लिए नास्तिक की आवश्यकता है, तो हमें दर्शन विभाग में जाना चाहिए। इसमें भौतिकी विभाग का अधिक उपयोग नहीं है।)

(Robert Griffiths)

An equation for me has no meaning unless it expresses a thought of God.
(मेरे लिए उस समीकरण का कोई मतलब नहीं है, जब तक कि यह भगवान् के विचार को प्रस्तुत नहीं देता।)

(Srinivasa Ramanujam)

[Source of all - Web]

इन प्रमाणों को पढ़ कर भी मुझे प्रतीत होता है कि इसे बुद्धि से स्वीकार करने में अभी कुछ दशक लगेंगे। इस कारण मैं भी यहाँ अपने लेख को जड़ पदार्थों तक ही सीमित रखता हूँ। पुनरपि मैं इसके लिए अपना ग्रन्थ **'वेदविज्ञान-आलोक'** पढ़ने का परामर्श दूंगा। **अल्बर्ट आइंस्टीन ईश्वर की कार्यप्रणाली को समझने को आतुर थे, यदि आज वे होते, तो मैं ईश्वर की कार्यप्रणाली वैज्ञानिक ढंग से समझाता। यदि कोई वैज्ञानिक आइंस्टीन की भाँति इस विषय को समझना चाहे, तो मैं उद्यत हूँ।**

विज्ञान की वर्तमान परिभाषा

यहाँ महर्षि यथार्थ ज्ञान (विज्ञान) के तीन साधन बताते हैं-

1. कर्म
2. ज्ञान
3. उपासना

इनमें से वर्तमान विज्ञान के प्रयोग, प्रेक्षण, परीक्षण आदि कर्म ऋषिप्रणीत प्रथम साधन कर्म के अन्तर्गत माने जा सकते हैं। वर्तमान विज्ञान के ये कर्म सर्वथा उचित हैं परन्तु इस पद्धति में अपूर्णता यह है कि इसमें ज्ञान व उपासना का कोई स्थान नहीं है। यहाँ ज्ञान का अर्थ हम तर्क, ऊहा व शब्द प्रमाण से ले सकते हैं। **महर्षि यास्क ने तर्क को ऋषि तथा ऊहा को ब्रह्म कहा है। इसकी उपेक्षा से प्रयोग, प्रेक्षण आदि परीक्षण कभी निर्भ्रान्त परिणाम नहीं दे सकते, न कोई इसके बिना वैज्ञानिक बन सकता है।** हम वैदिक दार्शनिक वा वैज्ञानिक प्रत्यक्ष, अनुमान व शब्द (आगम), इन तीन प्रमाणों को सत्य का आधार मानते हैं। कोई वैज्ञानिक इसका उपहास करे, तो उन्हें मैं बताना चाहूँगा कि आपके प्रयोग व प्रेक्षण प्रत्यक्ष प्रमाण के रूप हैं। आप प्रयोग एक स्थान पर करते हैं, उससे संपूर्ण ब्रह्मांड का अनुमान लगाते हैं। कोई वैज्ञानिक संपूर्ण ब्रह्मांड का प्रेक्षण नहीं कर सकता और न सर्वत्र प्रयोग कर सकता, बल्कि एक ही निष्कर्ष सर्वत्र लागू करते हैं। इसे ही दार्शनिक भाषा में अनुमान प्रमाण कहते हैं। आपने Redshift व CMB को देखा, यह प्रत्यक्ष था परन्तु उसके कारण का अनुमान यह लगाया कि Space expand हो रहा है व Big Bang हुआ था। यह आपका अनुमान प्रमाण था, प्रत्यक्ष नहीं। तब आप कैसे प्रत्यक्षवादी माने जा सकते हैं? अनुमान प्रमाण के बिना कोई भी अनुसंधान सम्भव नहीं, हाँ अनुमान प्रमाण में आपसे चूक अवश्य हुई, जो Space expansion व Big Biang का अनुमान कर लिया। यदि उचित तर्क ऊहा एवं

ध्यान आदि का विशेष उपयोग करते, तो निष्कर्ष कुछ दूसरे ही प्राप्त होते। वस्तुतः यथार्थ तर्क व ऊहा इसी प्रमाण के रूप हैं। यही प्रमाण सर्वाधिक व्यापक व महत्वपूर्ण है। बिना इसके न तो दर्शनशास्त्र और न आधुनिक भौतिकी का जीवित रहना संभव है। गणितीय व्याख्याएं भी अनुमान प्रमाण का ही रूप हैं। जहाँ प्रयोग व प्रेक्षण संभव नहीं, वहाँ अनुमान प्रमाण ही ज्ञान का आधार बन जाता है। हाँ, यह बात विशेष उल्लेखनीय है कि **सिद्धयोगियों (ऋषियों) की अंतर्दृष्टि प्रत्यक्ष व अनुमान दोनों ही क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करती है। वर्तमान वैज्ञानिक प्रयोगों से प्राप्त विभिन्न तरंगों की सूचनाओं के आधार पर ब्रह्मांड के रहस्यों का विश्लेषण करते हैं। वे उन तरंगों की अपेक्षा स्थूल कणों वा तरंगों का ही विश्लेषण उन तरंगों के माध्यम से कर पाते हैं। परंतु जब उन तरंगों वा उनसे सूक्ष्म तरंगों को जानना हो, तो वर्तमान भौतिकी असहाय हो जाती है। यही कारण है कि वर्तमान भौतिकी फोटोन, क्वार्क, ग्रेवीटॉन, स्पेस आदि की संरचना के विषय में कुछ नहीं जानती।**

अन्तिम प्रमाण शब्द प्रमाण की भी वैदिक दृष्टि में बहुत बड़ी महत्ता है। ईश्वरप्रणीत वेदों तथा महान् वैज्ञानिक महर्षियों में जब तक विश्वास व ऊहा नहीं होगी, तब तक उन्हें कोई प्रमाण मानेगा भी क्यों? इस कारण इस विषय में क्रमशः आगे बढ़ना आवश्यक है। इसमें भी ऊहा, तर्क, मनन, चिन्तन अपेक्षित है। कोई भी व्यक्ति इनके अभाव में कदापि वैज्ञानिक नहीं बन सकता। जहाँ तक शब्द प्रमाण की बात है, तो वर्तमान वैज्ञानिक भी स्थापित वैज्ञानिक मान्यताओं को प्रायः शब्द प्रमाण की भांति प्रयोग करते ही हैं। **जिस प्रकार प्लांक स्थिरांक आदि स्थिरांकों एवं हाइजेनबर्ग के अनिश्चितता का नियम, आइंस्टीन के सापेक्षता सिद्धान्त आदि को प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, तब ऋषियों व वेदों के प्रमाणों को काल्पनिक बताना क्या विदेशी बौद्धिक दासता का परिचायक नहीं है?** ये तो उचित है कि अनायास किसी को प्रमाण न माना जाये परन्तु बिना विचारे किसी प्रमाणभूत सिद्धान्त को

नकारना उचित नहीं है। अब अन्तिम साधन उपासना पर चर्चा करते हैं। वर्तमान वैज्ञानिकों को उपासना की बात ही अन्धविश्वास वा निरी कल्पना प्रतीत होगी परन्तु जब वे ईश्वर के अस्तित्व व स्वरूप की वैज्ञानिकता पर हमारे साथ मिलकर चर्चा करेंगे, तो उन्हें अपना भ्रम दूर होता प्रतीत होगा। जब सत्य विज्ञान के सभी मार्ग बंद हो गये हों किंवा वे अपर्याप्त सिद्ध हो रहे हों, **तब योगीजन ईश्वर के चिन्तन एवं योग साधना (उपासना) के द्वारा मन की रश्मियों को मूलकण व सूक्ष्म तरंगों से लेकर विशाल लोक-लोकान्तरों में प्रविष्ट कराकर उनका अध्ययन व साक्षात् विज्ञान प्राप्त किया करते थे। यह विज्ञान प्रायः निर्भ्रान्त हुआ करता था।** इन लौकिक यन्त्रों के परिमाणों में त्रुटि सम्भव है परन्तु उपासनाजन्य विज्ञान प्रायः निर्भ्रान्त हुआ करता है परन्तु आवश्यक यह है कि वह व्यक्ति वास्तव में योगी हो न कि वर्तमान में योग के नाम पर नाना अभिनय करने वाला हो। **शोक है कि वर्तमान काल में कोई योगी इस संसार में देखने व सुनने में नहीं आता है।** ध्यातव्य है कि उपासनाजन्य विज्ञान की तर्क, ऊहा से सर्वथा युक्त तथा उपलब्ध तकनीकी सीमा तक प्रयोग व प्रेक्षणों से सत्य सुसिद्ध होता है।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि महर्षि दयानन्द द्वारा दी गयी विज्ञान की परिभाषा वर्तमान परिभाषा से बहुत व्यापक तथा व्यवस्थित है। वर्तमान वैज्ञानिकों को इस पर विचार करना चाहिये, न कि अपनी परिभाषा एवं प्रयोग, प्रेक्षण, परीक्षण व गणित की सीमाओं से ही बंधे रहने तथा दूसरों को इसी पद्धति से बांधने का आग्रह करना चाहिये। यदि हम किसी अन्य पद्धति को अपना नहीं सकते, तो अन्य पद्धति के शोधकर्ता को भी अपनी पद्धति से चलने का आग्रह नहीं करना चाहिये। इसे हम एक उदाहरण देकर अपनी बात स्पष्ट करना चाहेंगे-

लक्ष्य एक मार्ग अनेक

वर्तमान में सम्पूर्ण विश्व में चिकित्सा की ऐलोपैथी पद्धति सर्वाधिक व्यापक है। उधर आयुर्वेद कभी विश्वव्यापी पद्धति थी। दोनों पद्धतियों के मूल सिद्धान्त, चिकित्सा प्रक्रिया एवं पथ्यापथ्य में भी सर्वथा भिन्नता है। इतने पर भी दोनों ही पद्धतियां रोगी को स्वस्थ करती ही हैं। कई असाध्य व जीर्ण रोगों में आयुर्वेद ही सफल है, ऐलोपैथी नहीं। मैंने कई ऐलोपैथी डॉक्टरों को चिकित्सा हेतु कुशल वैद्यों व नेचुरोपैथी डॉक्टरों के पास भटकते देखा है। ऐसी स्थिति में यदि ऐलोपैथी का डॉक्टर आयुर्वेद के डॉक्टर की अपनी पद्धति से परीक्षा करे, तो क्या यह उसकी भूल नहीं होगी?

इन दोनों के अतिरिक्त होम्योपैथी, आयुर्वेद की अपेक्षा भी कुछ भिन्न है तथा नेचुरोपैथी बिना किसी औषधि के रोग दूर करने में समर्थ है। इसका ऐलोपैथी से तो किंचित् भी तालमेल नहीं है। ऐसी स्थिति में भी ये सभी पद्धतियां विश्व में प्रचलित हैं तथा अपने-२ स्तर से मानव को स्वास्थ्य प्रदान कर रही हैं तथा शासन का सहयोग सभी को मिल ही रहा है। तब हम वैदिक वैज्ञानिकों से क्यों वर्तमान भौतिकी की शैली में लेख लिखने तथा भिन्न शैली के शोधकर्ताओं, जो अनेक समस्याओं से ग्रस्त भी हैं, से सत्यता का प्रमाणपत्र लेने की शर्त लगायी जाती है? क्या वैदिक विज्ञान की परीक्षा हमारे साथ गम्भीर संवाद करके तथा आधुनिक भौतिकी की गम्भीर समस्याओं के समाधान के विषय में हमारे विचारों की तार्किकता को जानकर नहीं की जा सकती? अन्यथा क्या हमारे विज्ञान पर शोध हेतु भारत सरकार आयुर्वेद की भांति पृथक् विभाग नहीं संचालित कर सकती? **पद्धति भले ही अनेक हों परन्तु शरीर सबके लिये एक है, इस कारण सभी पद्धतियों की सफल चिकित्सा का उपयोग हो रहा है और होना भी चाहिये। इसी प्रकार पद्धतियां पृथक्-२ हों, पुनरपि सृष्टि हम दोनों के लिये एक ही है। यदि परिणाम वर्तमान भौतिकी एवं वैदिक पद्धति दोनों से तार्किक प्राप्त होवें, तो पारस्परिक सहयोग व संवाद से राष्ट्र व विश्व को अधिक**

शुद्ध व व्यापक विज्ञान तथा तज्जन्य निरापद तकनीकी विज्ञान क्यों न दिया जाये?

वैदिक विज्ञान का स्वरूप

जो पूर्वाग्रही बन्धु मुझसे प्रयोग, परीक्षण व गणित का आधार देने का फिर भी आग्रह करें, वे प्रथम तो मेरे द्वारा उद्धृत वैज्ञानिकों को अवैज्ञानिक सिद्ध कर दें और न कर सकें, तो मैं उनके समक्ष महान् वैज्ञानिक रिचर्ड फाइनमैन के विचार प्रस्तुत करता हूँ-

"There are theoretical physicists who imagine, deduce and guess at new laws, but do not experiment, and there are experimental physicist who experiment, imagine, deduce and guess."

[Source of all - Web]

अर्थात् सैद्धान्तिक भौतिकविद् कल्पना, अनुमान से निष्कर्ष प्राप्त करता है, वह प्रयोग नहीं करता। उधर प्रायोगिक भौतिक शास्त्री उन कल्पनाओं, अनुमान आदि को प्रायोगिक रूप देता है।

मैं आपको ऐसी थ्यौरी दे रहा हूँ, जो पूर्णतः तर्कसंगत व क्रमबद्ध ढंग से सृष्टि की ऐसी व्याख्या करती है, जैसी आपके सारे प्रयोग, परीक्षण व गणित नहीं कर पा रहे। मैं आपको एक शताब्दी तक अनुसंधान का मार्ग बता रहा हूँ, जो theoretical physics को निरंतर मार्ग दिखाता रहेगा, तब आप संसार के सभी experimental physicists एवं mathematicians मिलकर मेरी थ्यौरी के लिए उपयुक्त गणित का विकास करने का प्रयास करें तथा प्रयोग व परीक्षणों की एक श्रंखला प्रारंभ करें, मैं आपके साथ खड़ा रहूँगा।

जब आप पीटर हिग्स की Higgs Boson की कल्पना तथा आइंस्टीन की ग्रेविटेशन वेव्स की कल्पना पर दशकों तक नहीं

अपितु शताब्दी तक धैर्य व विश्वासपूर्वक प्रयोग करने में लगे रह सकते हैं, तब ऋषियों के महान् विज्ञान पर क्यों कुछ भी विचार करने को तैयार नहीं हैं? **मैं पीटर हिग्स अथवा आइंस्टीन की अपेक्षा बहुत अधिक किंवा सैकड़ों ऐसे तर्कसंगत विचार दूंगा, जो आपकी थ्यौरिटीक्ल भौतिकी का कायाकल्प कर सकते हैं। हाँ, यदि आपको हमारा विज्ञान तर्कसंगत नहीं प्रतीत होवे, तो त्याग दें परंतु इसकी परीक्षा भी तो तभी हो सकेगी, जब आप हमारे साथ मिलकर बैठना, संवाद करना प्रारंभ करेंगे।**

यहाँ वर्तमान विज्ञान के अंधभक्त जिन्हें मैं रूढ़िवादी ही कहूँगा, हमसे कहते हैं, ''वेद की बात करने वालों ने क्या किया? पहले वे कुछ करके दिखाएं, उसके बाद ही वर्तमान विज्ञान पर टीका टिप्पणी करें।'' मैं ऐसे मित्रों से बड़ी विनम्रतापूर्वक कहना चाहूँगा कि संसार भर की बात क्या करूं, **अपने भारत में ही जनता के टैक्स से राजकीय संसाधन वैज्ञानिकों को ही मिलते हैं, हम वैदिकों को कौन क्या सहयोग कर रहा है?** फिर वे हमसे ऐसी अपेक्षा करें, यह शोभनीय नहीं हैं। पुनरपि मैं स्पष्ट कर दूँ कि विश्व की सर्वाधिक बड़ी प्रयोगशाला CERN में अरबों-खरबों डॉलर के व्यय से जो दिशा वर्तमान वैज्ञानिक प्राप्त कर सकते हैं, उससे अधिक तो मेरा ग्रंथ **'वेदविज्ञान-आलोक'** ही दे देगा। यदि किसी को विश्वास न हो, तो पढ़कर देख ले, और न समझ में आये, तो हमारे साथ चर्चा कर ले। इससे अधिक मैं क्या कहूँ? जरा वे ही बताएं कि **पिछले 50 वर्षों में CERN ने क्या विशेष उपलब्धि प्राप्त की?**

वर्तमान भौतिकी समस्या और समाधान

मेरे मित्रो! आपमें से अनेक महानुभाव इस बात से अनभिज्ञ होंगे कि वर्तमान theoretical physics आज एक गंभीर Crisis

से गुजर रहा है। यह बात स्वयं CERN की वेबसाइट पर देख सकते हैं।

…without new discoveries it's hard to keep a younger generation interested: "If both the LHC and the upcoming cosmological surveys find no new physics, it will be difficult to motivate new theorists. If you don't know where to go or what to look for, it's hard to see in which direction your research should go and which ideas you should explore."… (In Theory: Is theoretical physics in crisis? Posted by Harriet Kim Jarlett on 18 May 2016.)

इसी बात से खिन्न होकर अन्य वैज्ञानिक लिखते हैं-

"All of the theoretical work that's been done since the 1970s has not produced a single successful prediction," says **Neil Turok**, Director of the Perimeter Institute for Theoretical Physics in Waterloo, Canada

Hossenfelder argues that many physicists working today have been led astray by mathematics — seduced by equations that might be "beautiful" or "elegant" but which lack obvious connection to the real world.

"I can't believe what this once-venerable profession has become," she writes. ***"Theoretical physicists used to explain what was observed. Now they try to explain why they can't explain what was not observed. And they're not even good at that."***

(https://www.nbcnews.com/mach/science/why-some-scientists-say-physics-has-gone-rails-ncna879346)

इन उद्धरणों से स्पष्ट है कि वर्तमान वैज्ञानिक स्वयं स्वीकार कर रहे हैं कि उनके समक्ष गम्भीर संकट है। कुछ नया उन्हें मिल नहीं रहा है। सभी मार्ग अवरुद्ध जैसे प्रतीत हो रहे हैं। अब जरा विचारें कि ऐसी स्थिति में यदि हम आपको इस संकट (Crisis) से निकालने हेतु कोई ठोस तार्किक व व्यवस्थित वैदिक थ्यौरी दें, तब क्या आपको पद्धति की भिन्नता का हवाला देकर उसकी उपेक्षा करनी चाहिए? अथवा हमारे सहयोग से आधुनिक भौतिकी की समस्याओं को दूर करने का प्रयास करना चाहिए। जरा विचारें, **यदि कोई रोगी एलोपैथी चिकित्सा से स्वस्थ न हो रहा हो, तब क्या आप उसे आयुर्वेद व नेचुरोपैथी की चिकित्सा लेने से इस कारण रोकेंगे, क्योंकि इन पद्धतियों से आपका मतभेद है। आपको रोगी की मृत्यु स्वीकार है परन्तु भिन्न पद्धति से चिकित्सा कराना स्वीकार नहीं अर्थात् ब्रह्माण्ड की समस्याएं अनसुलझी बनी रहें, परंतु वैदिक थ्यौरी की सहायता स्वीकार नहीं। गणित व प्रयोगों के आधार पर नाना काल्पनिक थ्यौरी तो वैज्ञानिक हैं परंतु हमारी सुदृढ़ तार्किक थ्यौरी स्वीकार नहीं।** हम वर्तमान भौतिकी पर प्रश्न पूछें, तो आप उत्तर दें नहीं पाते, और हमारी थ्यौरी सुनते नहीं, तब आप हमसे प्रश्न ही कैसे पूछेंगे? इसे ही मैं रूढ़िवाद नाम देता हूँ। यही रूढ़िवाद कभी पोप ने गैलीलियो व ब्रूनो जैसे वैज्ञानिकों के प्रति अपनाया था, तब उन वैज्ञानिकों ने पोप को कहा था ‘‘आप आज हमारी बात मानें, न मानें परंतु आपकी आगामी पीढ़ी बाइबिल पर विश्वास नहीं करेगी और हमारे विज्ञान को मानेगी।’’ आज यह बात सत्य सिद्ध हो रही है।

मेरे वैज्ञानिक मित्रो! मैं भी आपको परामर्श दे रहा हूँ कि **आप आज वैज्ञानिक जगत् के पोप न बनें। आप आज मानें अथवा नहीं मानें, आपकी पीढ़ी हमारे वैदिक विज्ञान की ओर आने को विवश होगी, हाँ, तब तक आप संसार का खरबों-खरबों डॉलर धन**

व्यय कर चुके होंगे, अपूर्ण भौतिकी के आधार पर टेक्नोलॉजी के द्वारा पर्यावरण व धरती का इतना विनाश कर चुके होंगे कि आपका यहाँ रहना ही अति कष्टसाध्य वा असंभव हो जायेगा। इस कारण मेरा परामर्श है कि आप मेरी बात जितनी शीघ्र मान लें, उतनी ही मानवता की भलाई है। मैं तो आपसे यही कहूँगा कि आप theoretical physics की ऐसी समस्याओं, जिनका आप समाधान नहीं कर पा रहे, को मुझे अवगत करायें, उन्हें मुझे समझाएं कि वे कैसी समस्याएं हैं? तब मैं कुछ समय लेकर उनका समाधान अपनी थ्यौरी से देने का प्रयास करूँगा परंतु आप मुझसे उस समाधान में गणित व प्रयोगों की अपेक्षा न रखें। मैं केवल शुद्ध तार्किक रूप से व्यवस्थित ढंग से समाधान का प्रयास करूँगा। गणित व प्रयोगों को करने का कार्य आप करने का प्रयास करना और हम और आप मिलकर भौतिकी की समस्याओं को दूर करने का प्रयास करें। उदाहरण के लिए **आप कहते हैं कि गुरुत्व बल वास्तव में कोई बल नहीं है, बल्कि mass के कारण space curve होकर किसी कण वा क्वाण्टा को मार्ग प्रदान करता है। अब मैं प्रश्न करूं कि mass वा charge क्यों space को curve करते हैं? इसका mechanism क्या है?** तब आप इसका उत्तर नहीं दे पाते, तब मुझसे पूछें, मैं आपकी ही General Relativity की वैदिक पद्धति से व्याख्या करूँगा। जहाँ गुरुत्व बल भी होगा, space curvature भी होगा, space की व्यवस्थित तर्कसगत संरचना भी होगी तथा mass व charge द्वारा space को curve करने का सुन्दर क्रियाविज्ञान भी होगा। इसके साथ ही ग्रेवीटॉन, mass व charge की सुन्दर वैज्ञानिक व्याख्या भी होगी, ग्रेवीटॉन की संरचना भी होगी। अब आप ही बताइये कि मैंने आपसे क्या लिया, **जबकि इतनी ढेर सारी जानकारी देने हेतु उद्यत हूँ, जो आप संभवतः 50 वर्षों में भी शायद ही जुटा पाएं।** इस कारण मैं संसार के न केवल वैज्ञानिकों से, अपितु सभी शासकों व ब्यूरोक्रेट्स से निवेदन करूँगा कि वे मेरे इन विचारों पर पूर्ण निष्पक्षता से विचार करें, इसी में

सम्पूर्ण मानवता का हित है। मैं आपकी जानकारी के लिए अवगत कराना चाहता हूँ कि जब 3 अक्टूबर 2017 को गुरुत्वीय तरंगों की खोज के लिए 3 अमेरिकी वैज्ञानिकों को नोबेल पुरस्कार देने की घोषणा की गई, तब मैंने इस खोज पर 9 प्रश्न नोबेल फाउंडेशन के अध्यक्ष, तीनों विजेता वैज्ञानिक, NASA, CERN, विश्व के 27 देशों के शीर्ष 40 विश्वविद्यालयों के भौतिक विज्ञान विभाग, भारत के सभी फिजिक्स रिसर्च सेंटर, सभी केंद्रीय विश्वविद्यालयों तथा सभी आई. आई. टी. के भौतिक विज्ञान विभाग को भेजे। मैंने उस पत्र में उन प्रश्नों का उत्तर वैदिक भौतिकी के द्वारा देने का वचन भी दिया परंतु प्रायः सबमें एक उपेक्षा का भाव देखा। नोबेल पुरस्कार विजेता Kip Thorne ने अवश्य मुझे लिखा-

"Unfortunately, I am so overwhelmed that I am unable to answer questions at this time - and most likely not until 2018."
(मैं बहुत अधिक अभिभूत हूँ, परन्तु दुर्भाग्य से मैं आपके प्रश्नों के उत्तर देने में असमर्थ हूँ। सम्भवतः 2018 तो नहीं।)

NASA ने पत्र लिखा परन्तु मेरे प्रश्नों का उत्तर देने से बचते हुए। कुछ भारतीय प्रोफेसर्स ने भी गोलमोल उत्तर दिए परन्तु कहीं से ऐसी जिज्ञासा नहीं देखी कि वैदिक विज्ञान उन अनुत्तरित प्रश्नों का क्या उत्तर देता है? वास्तव में यह आधुनिक वैज्ञानिकों का अपनी वैज्ञानिकता, व उसकी पद्धति पर व्यर्थ अहंकार मात्र है। उन्हें इस अहंकार से बचना चाहिए, तभी वे आधुनिक भौतिकी को Crisis से बचाकर संसार को नया कुछ दे पाएंगे। मैंने अभी पुनः 100 प्रश्न इन सभी वैज्ञानिक संस्थानों को भेजे हैं परन्तु प्रायः सभी मौन हैं। हाँ, यह बात अवश्य सन्तोषजनक है कि कुछ युवा शोध छात्र एवं जूनियर प्रोफेसर्स अवश्य हमारे कार्य में रुचि ले रहे हैं तथा हमारे साथ कार्य करने को उत्सुक हैं। यह बात भी आशाजनक है कि आज मोदी जी के शासनकाल में भारत के कुछ

विश्वविद्यालयों व IIT's आदि में संस्कृत भाषा, प्राचीन वैदिक व संस्कृत साहित्य एवं वेद पर कुछ कार्य हो रहा है। उधर अमेरिका, जर्मनी, इंग्लैंड आदि कुछ देशों में भी संस्कृत भाषा, प्राचीन भारतीय संस्कृत व वैदिक साहित्य पर अनुसंधान का प्रयास हो रहा है। परन्तु मुझे प्रतीत होता है कि यह संपूर्ण कार्य तकनीकी ज्ञान तक ही सीमित है। **कुछ महानुभावों को विज्ञान का अर्थ तकनीकी ज्ञान ही प्रतीत होता है, सैद्धांतिक भौतिकी के क्षेत्र में ध्यान नहीं दिया जा रहा है, जबकि यही संपूर्ण विज्ञान का मूल है। इस कारण मूल वेद, ब्राह्मण ग्रंथों के अध्ययन अनुसंधान की ओर विश्व का ध्यान नगण्य है। इस विषय में मैं यह भी कहना चाहूँगा कि इनका अध्ययन केवल संस्कृत भाषा व व्याकरण के आधार पर संभव नहीं।** जब तक इन महान् ग्रन्थों शैली व आशय को परमात्मा की कृपा व साधना के द्वारा उच्च दैवी व वैज्ञानिक प्रतिभासम्पन्न व्यक्ति नहीं समझेगा, तब तक वैदिक भौतिकी के इन महान् ग्रन्थों को समझना, उसी प्रकार संभव नहीं होगा, जिस प्रकार अंग्रेजी भाषा का विद्वान् होकर ही कोई व्यक्ति विज्ञान की पुस्तकें पढ़ कर वैज्ञानिक नहीं बन सकता, जब तक कि उसे विज्ञान की परंपरा व शैली का ध्यान न हो। इस कारण इस क्षेत्र में कार्य करने वालों को विशेष सावधान रहना चाहिए।

जो वैज्ञानिक प्रतिभासम्पन्न महानुभाव अब भी यह विचारें कि मैं यूं ही हवाई बातें कर रहा हूँ, क्योंकि दुर्भाग्यवश आज अनेक भगवे वस्त्रधारी साधु बाबा व्यर्थ बातें किया ही करते हैं, तो मैं ऐसे मित्रों के लिए उन 100 प्रश्नों को यहाँ उद्घृत कर रहा हूँ–

1. ब्रह्माण्ड की प्रारंभिक अवस्था क्या है?

String Theory

2. स्ट्रिंग्स क्या है?

3. क्या वे शाश्वत सूक्ष्म पदार्थ हैं?
4. यदि नहीं, तो वे किससे बने हैं?
5. क्या उनमें द्रव्यमान है?
6. यदि स्ट्रिंग कंपित सूक्ष्म पदार्थ है, तो वे किस माध्यम में कंपन करते हैं?
7. उनकी ऊर्जा का स्रोत क्या है?
8. ब्रेन्स क्या हैं?
9. उनकी संरचना क्या है?
10. क्या वे शाश्वत हैं?
11. यदि नहीं, तो वे कैसे बनते हैं?

Eypyrotic Universe

12. ब्रेन्स के टक्कर का क्रियाविज्ञान क्या है?
13. कौन सा बल ब्रेन्स के आकर्षण और प्रतिकर्षण के लिए उत्तरदायी है?
14. यह एक चक्रीय प्रक्रिया है, तब क्या इस प्रक्रिया में ऊर्जा की कोई कमी नहीं होगी? यदि हाँ, तो यह चक्र भविष्य में समाप्त हो जायेगा और जो अतीत में शुरू हुआ था।
15. तब उस शुरुआत का क्या कारण था? अगर उनमें पहले से ही द्रव्यमान और आवेश विद्यमान था, तो ब्रह्मांड उन ब्रेन्स से ही स्वयं क्यों नहीं बना? फिर टक्कर की आवश्यकता क्यों पडी?

Big Bounce

16. जब गुरुत्वाकर्षण के कारण ब्रह्मांड पूरी तरह से सिकुड़ गया, तब कौनसा बल बिग-बैंग और बिग-बाउन्स के लिए उत्तरदायी है? यह बल कैसे उत्पन्न होता है?
17. क्या बिग-बाउन्स के दौरान टाईम शून्य हो जाता है?

18. यदि हाँ, तो यह टाईम पुनः कैसे शुरू होता है?
19. उस समय पदार्थ का क्या स्वरूप था?

Cyclic Universe

20. सबसे प्रथम बिग बैंग का क्या कारण था?
21. विस्तार के पश्चात् संकुचन का प्रारम्भ कैसे होता है, जबकि उस समय गुरुत्वाकर्षण बल प्रबल नहीं होता है।
22. ब्रह्माण्ड के क्रमिक विकास के दौरान गतिज ऊर्जा कैसे वृद्धि कर रही थी? क्या प्रारम्भ में गतिज ऊर्जा शून्य थी?

Bubble Universe

23. धनात्मक एवं ऋणात्मक ऊर्जा में क्या अन्तर है?
24. Nothing से धनात्मक एवं ऋणात्मक ऊर्जा के बनने का क्रियाविज्ञान क्या है?
25. भौतिकी के नियम कैसे बनते हैं?

Big Bang Theory

26. बिग बैंग से पूर्व पदार्थ का क्या स्वरूप था? पदार्थ का निर्माण कैसे होता है?
27. कौनसा बल उस पदार्थ को अनन्त रूप से संघनित करता है? उस बल का स्रोत क्या था?
28. शून्य आयतन में किसी भी प्रकार के पदार्थ के आदान-प्रदान की प्रक्रिया का होना कैसे सम्भव है?
29. वर्तमान विज्ञान सभी मूल बलों का कारण किन्हीं विशेष प्रकार के मीडिएटर पार्टिकल्स के आदान-प्रदान को मानता

है, तब उस अनन्त संघनित पदार्थ के अन्दर कौनसे पार्टिकल्स का आदान-प्रदान हुआ?

30. कौनसा बल या ऊर्जा, इतने शक्तिशाली बल के होते हुए भी उस महाविस्फोट के लिए उत्तरदायी है?

31. इन्फ्लेशन का क्या कारण है?

32. यदि इन्फ्लेशन एन्टी-ग्रेविटी के कारण होता है, तब किस कारण ग्रेविटी एन्टी-ग्रेविटी की तरह व्यवहार करती है?

33. इन्फ्लेशन फील्ड कब और कैसे बनता है और इसका क्या स्रोत है?

34. सिमिट्री कैसे भंग होती है और इसका क्या कारण है?

35. क्या सिमिट्री भंग के लिए ब्रह्माण्ड का कोई अन्य बल उत्तरदायी है?

36. चारों मूल बलों के विभाजन का क्या क्रियाविज्ञान है?

37. ये कैसे उत्पन्न होते हैं?

38. 10^{-43} के पहले ऊर्जा किस अवस्था में विद्यमान थी?

39. यदि यह फोटोन के रूप में थी, तब उस समय विद्युत चुम्बकीय बल भी अवश्य विद्यमान होना चाहिए, परन्तु इसे कोई भी स्वीकार नहीं करता, क्यों?

40. गुरुत्वाकर्षण बल सर्वप्रथम यूनिफाइड फोर्स से उत्पन्न हुआ, जबकि आइंस्टीन कहते हैं कि गुरुत्वाकर्षण बल कोई बल नहीं है बल्कि केवल स्पेस-टाइम का कर्वेचर है, तब गुरुत्वाकर्षण बल वास्तव में क्या है?

Time

41. काल (टाइम) क्या है?

42. काल कैसे उत्पन्न होता है?

43. यह बिग बैंग के समय कैसे प्रारम्भ होता है?

44. क्या यह केवल भ्रम है या वास्तव में कोई सूक्ष्म पदार्थ है?

45. ब्रह्माण्ड में इसकी क्या भूमिका है?

46. ऋणात्मक या शून्य टाइम (काल) से हमारा क्या आशय है?

47. इसके स्वरूप की वास्तविकता को जाने बिना हम कैसे कह सकते हैं कि टाइम ऋणात्मक या शून्य होता है?

Space

48. स्पेस क्या है?

49. ब्रह्माण्ड में इसकी क्या भूमिका है?

50. वर्तमान वैज्ञानिक स्पेस की संरचना को शीट या नेट जैसा मानते व दर्शाते हैं, परन्तु कोई इसकी वास्तविक संरचना के बारे में नहीं जानता है?

51. इसके उत्पत्ति का क्रियाविज्ञान क्या है?

52. क्या आकाश (Space) एक वास्तविक पदार्थ है? जो एक द्रव्यमान युक्त वस्तु के प्रभाव से मुड़ता है, और जिसमें तरंगें उत्पन्न होती हैं और जो फैलता है तथा विकृत होता है?

53. यह किन-२ पदार्थों से मिलकर बनता है?

54. स्पेस द्रव्यमान युक्त और आवेशित वस्तुओं के साथ क्रिया क्यों करता है?

55. स्पेस और द्रव्यमान/आवेश के मध्य क्या संबंध है?

56. क्या स्पेस में द्रव्यमान और आवेश विद्यमान होता है?

57. हम स्पेस टाइम की Singularity की बात करते हैं लेकिन स्पेस और टाइम के मध्य क्या संबंध है? और क्यों?

58. अगर स्पेस एक काल्पनिक वस्तु है, तब इसका विस्तार, विनाश, झुकाव और Singulirity भी काल्पनिक होनी चाहिए, तो हम काल्पनिक वस्तुओं से वास्तविक संसार को कैसे समझ सकते हैं?

Red Shift and CMB

59. क्या विद्युत चुम्बकीय तरंगें स्पेस के साथ जुड़ी हुई हैं?

60. यदि हाँ, तो उनकी अपनी कोई गति नहीं होगी, लेकिन वे स्पेस की गति के साथ गमन करेंगी, जो वर्तमान समय में Hubble गति होगी?

61. बिग-बैंग के समय, सम्पूर्ण ऊर्जा स्पेस के साथ गमन करेगी (10^{28} m/s)। तब खगोलीय पिंड के निर्माण के लिए ऊर्जा को कैसे संघनित किया जा सकता है?

62. क्या सभी खगोलीय पिंड और कण भी स्पेस से जुड़े होते हैं? यदि हाँ, तो वे एक-दूसरे साथ संयोग कभी नहीं करेंगे और वे सिर्फ स्पेस की गति से गमन करेंगे।

63. यदि वैद्युत चुम्बकीय तरंग स्पेस के साथ जुड़ी हुई नहीं है, तब रेडशिफ्ट का क्या कारण है?

64. स्पेस का फैलाव सिर्फ तरंगों को प्रभावित कर सकता है, अणु, परमाणु आदि क्यों को नहीं?

65. स्पेस का फैलाव क्यों सिर्फ गेलैक्सियों को प्रभावित कर सकता है, और तारे, ग्रह व उपग्रह को नहीं?

66. CMB विकिरण, जो 13 अरब वर्षों से पहले मुक्त हुआ था, तो अब हम इसे कैसे प्राप्त कर सकते हैं? जबकि ब्रह्माण्ड एक त्वरित गति के साथ फैल रहा है।

67. अगर यह विकिरण लगातार हमारे द्वारा निरन्तर प्राप्त हो रहा है, तो इसका तापमान ब्रह्माण्ड में हर जगह समान नहीं हो सकता।

Elementary Particles

68. ग्रेवीटॉन या अन्य फील्ड कण कैसे बनते है?

69. ब्रह्मांड के प्राथमिक अवस्था में फोटॉन और मूल कण कैसे बनते हैं?

70. उनकी संरचना क्या है?

71. गुरुत्वाकर्षण बल सबसे कमजोर बल क्यों है?

Mass

72. वास्तव में द्रव्यमान क्या है?

73. द्रव्यमान का गुण कैसे उत्पन्न होता है?

74. यदि इसका उत्तर हिग्स फील्ड है, तो इसके Quanta के द्रव्यमान का क्या कारण है? (हिग्स बोसोन 125 GeV/c^2)

75. यदि हम कहें कि यह द्रव्यमान बिग–बैंग के समय ऊर्जा से उत्पन्न होता है, तो प्रश्न यह हैं कि यदि एक बहुत बड़े कण (हिग्स बोसोन) की उत्पत्ति ऊर्जा द्वारा सम्भव है, तब उसी ऊर्जा से अत्यधिक छोटे द्रव्यमान वाला इलेक्ट्रॉन क्यों नहीं उत्पन्न हो सकता?

Charge

76. पदार्थ द्वारा आवेश के गुणधर्म दर्शाने का मौलिक कारण क्या है?

77. यदि यह ऊर्जा(युम्म उत्पादन) से उत्पन्न होता है, तो क्या इसका अर्थ यह नहीं है कि फोटॉन में इलेक्ट्रॉन और पॉजिट्रॉन के समान अवयव होते हैं?

78. वे कौन से मौलिक पदार्थ है, जिनसे आवेश के गुणधर्म उत्पन्न होते है।

79. आवेश और ऊर्जा के बीच क्या सम्बंध है?

80. यदि पीटर हिग्स ने द्रव्यमान जैसे मौलिक गुणधर्म के लिए हिग्स फील्ड की कल्पना की है, तो मुझे विद्युत् आवेश जैस मौलिक गुणधर्म विद्युत आवेश के लिए और किसी फील्ड की कल्पना क्यों नहीं करनी चाहिए?

81. साथ ही, विभिन्न प्रकार के आवेश (कलर आवेश) के लिए विभिन्न प्रकार के फील्ड होने चाहिए। क्या आप इसे स्वीकार करेंगे?

82. विपरीत आवेशित कणों के अवयवों के मध्य क्या अंतर है?

83. वर्चुअल फोटॉन का आवेशित कणों के मध्य क्यों आदान-प्रदान होता है, जबकि ये द्रव्यमानरहित होते हैं तथा उन पर कोई विद्युत् आवेश भी नहीं होता है।

84. इन फोटॉनों को क्यों नहीं डिटेक्ट कर सकते?

85. वे थोड़े समय के लिए क्यों विद्यमान रहते हैं?

86. इनके आदान-प्रदान के लिए कौनसा बल जिम्मेदार है?

87. एक विद्युत् क्षेत्र किससे बना होता है?

88. आवेशित कण विद्युत् क्षेत्र को कैसे बनाते हैं?

89. वैक्यूम ऊर्जा का क्या रूप है और यह कैसे उत्पन्न होती है?

90. वैक्यूम ऊर्जा से फील्ड कण की उत्पत्ति की क्रियाविधी क्या है?

91. फील्ड कणों के आदान-प्रदान के माध्यम से दो विपरीत आवेश कणों के आकर्षण का क्रियाविज्ञान क्या है?

ऊर्जा और डार्क ऊर्जा

92. ऊर्जा क्या है?

93. यह कैसे उत्पन्न होती है?

94. ऊर्जा द्वारा द्रव्यमान कैसे उत्पन्न होता है?

95. इसका क्रियाविज्ञान क्या है?

96. एक अवस्था से दूसरी अवस्था में ऊर्जा के रूपान्तरण का क्रियाविज्ञान क्या है?

97. डार्क पदार्थ क्या है और कैसे व किससे बना है?

98. डार्क ऊर्जा है और यह कैसे उत्पन्न होती है?

99. डार्क पदार्थ तथा डार्क ऊर्जा में क्या सम्बंध है?

100. किसी भी आकाशगंगा में उसके केन्द्र से तारों को धारण करने का क्रियाविज्ञान क्या है?

पाठकों से अनुरोध है कि इन सब प्रश्नों पर पर्याप्त चिन्तन करें। अपने परिचित देश-विदेश के वैज्ञानिकों से पूछें, यदि उत्तर मिलें, तो मुझे सूचित करें, मैं उनका व आपका आभारी रहूँगा। यदि कहीं उत्तर नहीं मिलते, **तो जो प्रश्न सबसे कठिन प्रतीत होते हों, साथ ही वर्तमान विज्ञान की भ्रान्त धारणाओं से संबंधित न हों, उनके उत्तर के लिए मैं किसी कॉफ्रेंस में अपना वक्तव्य देने के लिए उद्यत रहूँगा।**

आशा है पाठक एवं देश व विश्व के वैज्ञानिक एवं अन्य उत्तरदायी व्यक्ति इस दिशा में तार्किक ढंग से विचार अवश्य करेंगे और देश व विश्व का वास्तविक कल्याण करने में मिलकर कार्य करेंगे।

आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

विनम्र निवेदन

मान्यवर! आपने आचार्य जी के कार्य और महत्ता को भली प्रकार समझ लिया होगा, ऐसी आशा करते हैं। यदि आपके हृदय और मस्तिष्क वेद के इस अपूर्व कार्य के लिए उत्सुक हुए हों और हमें अपना सहयोग करना चाहें तो आप हमारे यज्ञ में निम्न प्रकार से सहयोगी बन सकते हैं–

1. प्रतिवर्ष न्यूनतम 12,000/- रूपये अथवा एक बार न्यूनतम एक लाख रूपये का दान करके सहयोगी संरक्षक बन सकते हैं। आपको न्यास की वार्षिक बैठक में, जो प्रायः वार्षिकोत्सव के अवसर पर हुआ करेगी, में विशेष अतिथिरूपेण आमन्त्रित किया जाता रहेगा।
2. प्रतिवर्ष न्यूनतम 6,000/- रूपये अथवा एक साथ न्यूनतम 50,000/- रूपये देकर विशेष आमन्त्रित सदस्य बन सकते हैं। आपको भी वार्षिक बैठक के अवसर पर अतिथि रूपेण आमन्त्रित किया जाता रहेगा।
3. वार्षिक न्यूनतम 1,000/- रूपये अथवा एक सौ मासिक देते रहकर सहयोगी सदस्य बन सकते हैं।

नोट– उपर्युक्त सभी सहयोगी महानुभावों को न्यास की C.A. द्वारा की हुई वार्षिक ऑडिट रिपोर्ट भेजी जाया करेगी। जो महानुभाव स्वयं दान नहीं कर सकें, वे दूसरों को प्रेरित करके कम से कम 8 सदस्य आदि बनाकर स्वयं निःशुल्क उसी श्रेणी के सदस्य वा सहयोगी संरक्षक आदि बन सकते हैं।

4. वयोवृद्ध विद्वान्, संन्यासी, साधु, महान् वैज्ञानिक महानुभाव अपना आशीर्वाद तथा बौद्धिक सहयोग दे सकते हैं।
5. विद्यार्थी, किसान, श्रमिक, व्यापारी आदि अपनी पवित्र आहुति श्रद्धा व सामर्थ्य के अनुसार सहयोग कर सकते हैं।

विशेष निवेदन

यह कार्य अत्यन्त पवित्र है, इस कारण आचार्य श्री की भावनानुसार विनम्र निवेदन है कि **जिनकी आजीविका किसी भी प्रकार की हिंसा, चोरी, तस्करी, अश्लीलतावर्धक साधनों, नशीली वस्तुओं की विक्री, धोखाधड़ी, शोषण आदि पर निर्भर हो तथा जो निर्धन भाई अपनी सामर्थ्य से अधिक (अथवा अपने परिवार में क्लेश करके) दान देना चाहते हों, ऐसे महानुभावों की सद्भावना का धन्यवाद करते हुए भी हम उनका दान लेने में असमर्थ हैं। कृपया ऐसा करने का प्रस्ताव करके हमें लज्जित न करें। हाँ, जो बन्धु ऐसे कर्मों को त्यागकर हमसे जुड़ना चाहें, तो उनका हार्दिक स्वागत है।**

Bank Name	**Punjab National Bank**
A/c Holder	Pramukh, Shri Vaidic Swasti Pantha Nyas
A/c Number	4474000100005849
Branch	Bhinmal
IFS Code	PUNB0447400

या

Bank Name	State Bank of India
A/c Holder	Pramukh, Shri Vaidic Swasti Pantha Nyas
A/c Number	61001839825
Branch	Khari Road, Bhinmal
IFS Code	SBIN0031180

आप अपना चैक/ड्राफ्ट/धनादेश, **"प्रमुख, श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास"** PAN No. AAATV7229A के नाम (केवल खाते में देय) भेजने का कष्ट करें, साथ ही अपना नाम व पता साफ अक्षरों में लिखकर अवश्य भेजने की कृपा करें। **आप ऑनलाइन भी धन जमा करवा सकते हैं** परन्तु ऐसा करने वाले **महानुभाव अपना नाम व पता दूरभाष द्वारा तत्काल सूचित करने का कष्ट करें,** जिससे समय पर रसीद भेजी जा सके, अन्यथा हमें बहुत कठिनाई होती है।

नोट- न्यास को दिया हुआ दान आयकर अधिनियम 1961 **की धारा** 80**-जी**

Donations now accepted through BHIM/UPI also

UPI Address shrivspnyas@upi

मानवधर्म सूत्रदशक (आर्य समाज के नियम)

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदिमूल परमेश्वर है।

2. ईश्वर सच्चिदानंदस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनंत, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वांतर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करने योग्य है।

3. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों (श्रेष्ठ मनुष्यों) का परम धर्म है।

4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।

5. सब काम धर्मानुसार, अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिये।

6. संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

7. सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिये।

8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।

9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिये, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये।

10. सब मनुष्यों को सामाजिक, सर्वहितकारी, नियम पालने में परतंत्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम पालने में सब स्वतंत्र रहें।

Recent Development on Cosmology, BHU 2018

VedVigyan-Alok

(A Vaidic Theory of Universe)

Scientific interpretation of Aitarey Brahman

Contact Us: +91 7424980963, 02969 292103

आधुनिक भौतिक विज्ञान अपूर्ण, असहाय तथा अनेकत्र उलझनों में फंसा प्रतीत होता है। उस असहाय, उलझे व अपूर्ण आधुनिक भौतिक विज्ञान को सहायता देना मेरा उद्देश्य है।

-आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

   /vaidicphysics